OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Vol. 01, No. 02 (2025): October-December ISSN : Applied

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक महत्व और राष्ट्रीय उत्थान में इसकी भूमिका

राहुल शर्मा
शोध छात्र, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय

भारतीय सभ्यता की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वे सदियों से ज्ञान की नदियों को सीचती आई हैं, और शिक्षा इस सभ्यता का वह आधार रही है जो व्यक्ति को न केवल बौद्धिक रूप से मजबूत बनाती है, बल्कि उसे जीवन के हर आयाम में संतुलन सिखाती है। प्राचीन काल में शिक्षा का मतलब सिर्फ किताबी ज्ञान नही था; यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जो इंसान को उसके भीतर की शक्तियों से जोड़ती थी, उसे नैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाती थी। उस दौर में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना था, जहाँ जीवन के चार मुख्य लक्ष्यों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को हासिल करने की दिशा में मार्गदर्शन मिलता था। यह प्रणाली समाज को एकजुट रखती थी, क्योंकि इसमें हर वर्ग और समुदाय का योगदान था, और शिक्षा किसी शासकीय नियंत्रण से मुक्त होकर समाज की साझी जिम्मेदारी बनी हुई थी।

उस समय की शिक्षा व्यवस्था गुरुकुलों पर टिकी हुई थी, जहाँ छात्र गुरु के आश्रम में रहकर ज्ञान ग्रहण करते थे। यहाँ न केवल किताबें पढ़ाई जाती थी, बल्कि जीवन के व्यावहारिक सबक भी सिखाए जाते थे। छात्रों को ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था, जिसमें सादगी भरा जीवन, गुरु की सेवा और प्रकृति के साथ सामंजस्य शामिल था। राजकुमार से लेकर साधारण परिवार के बच्चे तक सभी एक समान भाव से शिक्षा प्राप्त करते थे, और इस प्रक्रिया से निकलने वाला व्यक्ति न केवल विद्वान होता था, बल्कि चरित्रवान और संस्कारित भी। गुरु और शिष्य का रिश्ता इतना गहरा होता था कि वह समाज की नैतिक नीव को मजबूत करता था। इस व्यवस्था ने भारत को ज्ञान, विज्ञान,

OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Vol. 01, No. 02 (2025): October-December ISSN : Applied

कला और संस्कृति के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी राष्ट्र बनाया। देश की समृद्धि, सामाजिक सद्भाव और वैज्ञानिक प्रगति इसी शिक्षा की देन थी, जहाँ हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी के ज्ञान को संरक्षित और समृद्ध करके आगे बढ़ाती थी।

लेकिन समय के साथ परिवर्तन आया, और विदेशी शक्तियों ने भारत की इस मजबूत नींव को हिलाने की कोशिश की। जब यूरोपीय ताकतें भारत में आईं, तो उन्होंने न केवल राजनीतिक सत्ता पर कब्जा किया, बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तर पर भी प्रभाव डालने की रणनीति अपनाई। उन्होंने शिक्षा को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया, ताकि भारतीयों की सोच को बदल सकें। प्राचीन गुरुकुलों को कमजोर करके एक नई प्रणाली थोपी गई, जो यूरोपीय मूल्यों पर आधारित थी। इसका उद्देश्य भारतीयों को अपनी जड़ों से काटना था, ताकि वे खुद को कमतर समझें और विदेशी संस्कृति को श्रेष्ठ मानें। इस बदलाव ने समाज में एक तरह की मानसिक दासता पैदा की, जहाँ लोग अपनी परंपराओं को पुराना और पिछड़ा मानने लगे। शिक्षा अब रोजगार की सीढ़ी बनकर रह गई, और उसके नैतिक और आध्यात्मिक आयाम खो गए।

इस प्रक्रिया में इतिहास को भी तोड़-मरोड़कर पेश किया गया। विदेशी इतिहासकारों ने भारतीय अतीत को कमजोर दिखाने की कोशिश की, ताकि लोग अपने गौरवशाली इतिहास को भूल जाएं। उन्होंने भारतीय समाज की विविधता को संघर्ष का कारण बताकर आपसी फूट डालने की कोशिश की, जबकि वास्तव में भारत की ताकत उसकी एकता में थी। शिक्षा की नई व्यवस्था ने भारतीयों को ऐसी सोच दी जो विदेशी हितों के अनुकूल थी एक ऐसा वर्ग तैयार हुआ जो बाहरी दिखावा तो अपनाता था, लेकिन अंदर से अपनी जड़ों से कटा हुआ था। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी यह मानसिक दासता बनी रही, क्योंकि शिक्षा प्रणाली में मूलभूत बदलाव नही आया। आज भी हम देखते हैं कि समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, सामाजिक सद्भाव कमजोर पड़ रहा है, और लोग अपनी सांस्कृतिक धरोहर से दूर होते जा रहे हैं।

यह स्थिति राष्ट्रीय उत्थान के लिए एक बड़ी बाधा है। अगर हम भारत को फिर से उसकी पुरानी गरिमा पर पहुंचाना चाहते हैं, तो शिक्षा को उसकी जड़ों से जोड़ना होगा। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक समय के अनुरूप बनाना जरूरी है, जहाँ विज्ञान, तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण को शामिल किया जाए, लेकिन नैतिकता और संस्कारों को केंद्र में रखा जाए। शिक्षा को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करके समाज की साझी जिम्मेदारी बनाना चाहिए, ताकि हर वर्ग इसमें योगदान दे सके। पाठ्यक्रम में भारतीय मूल्यों को स्थान देना होगा, जो छात्रों को उनके

OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Vol. 01, No. 02 (2025): October-December ISSN : Applied

इतिहास, संस्कृति और नैतिक दायित्वों से जोड़े। ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति को सिर्फ नौकरी के लिए नही, बल्कि समाज के निर्माण के लिए तैयार करे, वही राष्ट्रीय पुनरुत्थान की कुंजी बनेगी।

प्राचीन शिक्षा की ताकत यह थी कि वह जीवन को समग्र रूप से देखती थी। छात्र न केवल किताबें पढ़ते थे, बल्कि प्रकृति से सीखते थे, गुरु की सेवा से अनुशासन ग्रहण करते थे, और समाज के साथ जुड़कर अपनी भूमिका समझते थे। आज की शिक्षा में यह कमी है वह बौद्धिक विकास पर जोर देती है, लेकिन चरित्र निर्माण को नजरअंदाज कर देती है। अगर हम प्राचीन प्रणाली के आदर्शों को अपनाएं, तो छात्रों में राष्ट्रीय गौरव की भावना जगेगी। वे न केवल अपनी संस्कृति का सम्मान करेंगे, बल्कि उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करेंगे। शिक्षा को युगानुकूल बनाना मतलब पुराने मूल्यों को नए संदर्भ में ढालना है जैसे कि आधुनिक विज्ञान को भारतीय दर्शन से जोड़ना, ताकि छात्र वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकें।

राष्ट्रीय उत्थान का मतलब सिर्फ आर्थिक प्रगति नही है; यह सांस्कृतिक और नैतिक उत्थान भी है। प्राचीन शिक्षा ने भारत को विश्व गुरु बनाया था, जहाँ ज्ञान की धारा हर दिशा में बहती थी। आज हमें उस धारा को फिर से प्रवाहित करना है, ताकि युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़कर आगे बढ़े। शिक्षा को समाज केंद्रित बनाना होगा, जहाँ गुरु-शिष्य का रिश्ता सम्मानजनक हो, और छात्रों में सामाजिक दायित्व की भावना हो। ऐसी व्यवस्था से ही हम मानसिक दासता से मुक्त हो सकेंगे, और भारत को फिर से अपनी सांस्कृतिक गरिमा पर स्थापित कर सकेंगे।

अंत में, भारतीय शिक्षा की प्राचीन प्रणाली हमें सिखाती है कि ज्ञान मुक्ति का माध्यम है, न कि बंधन का। अगर हम इसे आधुनिक जरूरतों के साथ जोड़ें, तो राष्ट्रीय पुनरुत्थान संभव है। युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़कर, उन्हें नैतिक मूल्यों से लैस करके, हम एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं जो विश्व में फिर से अग्रणी बने। यह यात्रा चुनौतीपूर्ण है, लेकिन प्राचीन आदर्शों से प्रेरणा लेकर हम इसे पूरा कर सकते हैं। शिक्षा न केवल व्यक्ति को बदलती है, बल्कि पूरे समाज को नई दिशा देती है, और यही राष्ट्रीय उत्थान की सच्ची कुंजी है।

OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Vol. 01, No. 02 (2025): October-December ISSN : Applied

संदर्भ

1. तोमर, लज्जाराम। भारतीय शिक्षा के मूल तत्व।
2. श्री ईशोपनिषद्।
3. श्री रामचरितमानस।
4. सोनी, सुरेश। भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परंपरा।
5. धर्मपाल। भारत का पुनर्बोध।
6. धर्मपाल। भारत की लूट एवं बदनामी।
7. धर्मपाल। भारत की लूट एवं बदनामी।
8. धर्मपाल। भारत की लूट एवं बदनामी।
9. धर्मपाल। रमणीय वृक्ष।
10. धर्मपाल। रमणीय वृक्ष।
11. श्रीमद्भगवद्गीता।